जागृति में कलीसिया

"...और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।"
(प्रेरितों के काम 2:47)

आशीष रायचूर

मुद्रण और वितरणः **ऑल पीपल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बंगलौर**
प्रथम संस्करण अक्तूबर 2011

अनुवाद एवं प्रूफरीडिंग : डॉर्थी शरदकान्त वाघमारे
मुख पृष्ठ एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन : करुणा जयरोम, बाईफेथ डिज़ाइन्स

Contact Information:
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

इस्तेमाल किए गए बाइबल के संदर्भ पवित्र बाइबल से लिए गए हैं।

निशुल्क वितरण हेतु
इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क पुस्तक के द्वारा आशीष पाई है, तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि ऑल पीपल्स चर्च की निःशुल्क प्रकाशन सामग्री की छपाई और वितरण में सहायता करने हेतु आर्थिक रूप से हमें योगदान दें। धन्यवाद!

(Hindi book - A Church in Revival)

जागृति

जागृति में कलीसिया

"...और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।"
(प्रेरितों के काम 2:47)

विषय सूची

परिचय 1

1. **यरूशलेम की कलीसिया** 2

एकता और प्रार्थना में जन्म हुआ 2

"यही" "वह" बात है 4

2. **जागृति में कलीसिया** 9

प्रतिदिन लगातार उसी में बने रहे जो परमेश्वर उनके बीच में प्रकट करता रहा 9

कार्यक्रम तेजी से प्रभावित हुए 10

सामाजिक भावना–आपस में बाँटते थे 11

कलीसिया की तेजी से उन्नति 11

महान आश्चर्यकर्म जिसके कारण कलीसिया की लगातार उन्नति हुई 12

सताव 12

पाप का कठोर न्याय 14

अलौकिक प्रर्दशन और स्वर्गदूतों का प्रकट होना 14

आन्तरिक समस्याओं से विचलित नहीं हुए 15

प्रत्येक जन चमत्कार में बहता था 16

अग्नि फैल गई 17

परिचय

जागृति परमेश्वर के भ्रमण का काल है। यह स्वर्ग से उण्डेले जाने का समय है। भ्रमण के समय बहुत सी बातें भिन्न होती है। 2008 के आरम्भ में प्रभु से हमें जो वचन मिला वह था कि यह वर्ष आत्मिक और भौतिक उण्डेले जाने का होगा। यद्यपि हमें वह सब कुछ नहीं मालूम था जिसमें हम प्रवेश कर रहे थे, परन्तु हम इतना जानते थे कि परमेश्वर कह रहा था कि यह वर्ष उण्डेले जाने का वर्ष होगा। यह केवल वर्ष के अन्त में हुआ जब हमने ये बातें होती हुई देखी। और अब हम ठीक उसी में चल रहे है जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की है और अपने आपको ठीक रीति से रख रहे जहाँ हम जागृति, उण्डेले जाने, स्वर्ग से भ्रमण होने का स्वागत् करें।

हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए यह माँगते हैं कि वह जागृति भेजे- उण्डेला जाना अथवा स्वर्गीय भ्रमण, परन्तु क्या हम उस जागृति के लिए तैयार होना चाहिए जब वह प्रकट हो!

जब जागृति आती है तब कलीसिया कैसी दिखती है? आप और मैं जागृति के बीच होंगे तो हमें क्या होगा- जब स्वर्गीय उण्डेले जाने का काम होगा, परमेश्वर की ओर से आत्मिक भ्रमण होगा? एक बात तो पक्की है कि कलीसिया उस समय ऐसी नहीं होगी जैसी आज हम देखते हैं। जब हम कलीसिया के रुप में रविवार को इकट्टे होते है तब हम सामान्यत: पास्टर के उपदेश के समाप्त होने तक प्रतीक्षा करते है। हममें से कुछ लोग बीच-बीच में सो भी जाते हैं और घर चले जाते है। परन्तु जब परमेश्वर भ्रमण करेगा तब निश्चय ही कलीसिया बहुत भिन्न होगी। परमेश्वर के पवित्रात्मा के उण्डेले जाने हेतु तैयार हो जाएं!

1

यरूशलेम की कलीसिया

इस पुस्तक का उद्देश्य है कि यह हमें वह तस्वीर अथवा दर्शन दे जब परमेश्वर का चलन हो और हम उस समय में हो जब परमेश्वर भ्रमण करे तो कलीसिया का जीवन कैसा होगा। आइए हम प्रेरितों के काम के पहले आठ अध्याय पढ़ें और कुछ महत्वपूर्ण जागृति से सम्बन्धित बिन्दुओं पर विचार करे जो यरूशलेम में आरम्भ हुई– परमेश्वर का एक ऐसा भ्रमण जिसने यरूशलेम की कलीसिया को जन्म दिया। हम "जागृति" और कलीसिया के उस समय के जीवन में यरूशलेम की कलीसिया से सीख सकते हैं, जिसका जन्म स्वर्ग से परमेश्वर के भ्रमण के बीच हुआ था।

एकता और प्रार्थना में जन्म हुआ

जागृति के लिए महत्वपूर्ण बात क्या थी– वह वास्तव में क्या तैयारी थी जिसमें यरूशलेम के लोग लगे रहे उससे पहले कि वे वास्तव में स्वर्ग के पवित्रात्मा के उण्डेले जाने में प्रवेश करते? यीशु ने अपने चेलों को आदेश दिया था कि वे यरूशलेम में ठहरे रहें क्योंकि एक उण्डेले जाने का काम होने वाला था। उसने उन्हें एक विशेष जगह दिखाई और कहा कि केवल प्रतीक्षा करें। जागृति से पहले की तैयारी के विषय में प्रेरितों के काम 1:14 में चर्चा की गई है।

"ये सब कई स्त्रियों और यीशु की माता मरियम और उसके भाइयों के साथ एक चित्त होकर प्रार्थना में लगे रहे" (प्रेरितों के काम 1:14)।

सभी 120 चेले यरूशलेम में एक मन होकर प्रार्थना और निवेदन में लगे रहे। यहाँ दो बातें ध्यान देने योग्य है: पहली बात "एक मन", जिसका अर्थ है "एक विचार का होना"। बाइबल कहती है कि वे एक मन होकर बने रहे। न केवल उन्होंने एक मन होकर आरम्भ किया परन्तु

वे एक मन बने रहे। अत: एकता, एक साथ रहना, एक मन और एक उद्देश्य का होना बहुत आवश्यक है। एक ही बात की ओर जाना और उसी तरफ बढ़ना परमेश्वर की ओर से उण्डेले जाने के लिए बहुत आवश्यक तैयारी का कदम है। एक ऐसे माहौल में जहाँ एकता है वहाँ उण्डेले जाने का काम होता है। परमेश्वर अपनी आशीष वह भेजता है।

"देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें! यह तो उस उत्तम तेल के समान है, जो हारून के सिर पर डाला गया था, और उसकी दाढ़ी पर बहकर, उसके वस्त्र की छोर तक पहुँच गया। यह हेर्मोन की उस ओस के समान है, जो सिय्योन के पहाड़ों पर गिरती है! यहोवा ने तो वहीं सदा के जीवन की आशीष ठहराई है" (भजनसंहिता 133:1-3)।

इसका अर्थ है कि उण्डेले जाने की तैयारी के रूप में आपको और मुझे आत्मा की एकता, एक सामान्य उद्देश्य-कि हम परमेश्वर के भूखे हैं और हमें उसकी और अधिक चाह है, इस एकता को बनाए रखने का प्रयास करना है। जब परमेश्वर के लोग एकता में आते है-चाहे उनके नाम, समुदाय और सिद्धान्त कुछ भी क्यों न हों-इनको अलग करके वे केवल एक उद्देश्य के साथ आते है कि वे परमेश्वर को खोज रहे हैं, तब उसके आत्मा की उपस्थिति की और सामर्थ की महत्व वर्षा होगी। अभिषेक, तरोताजा, आशीषों और जीवन की वर्षा सब पर होगी, सिर से लेकर पैर तक बड़े से लेकर छोटे तक!

दूसरी बात यह थी कि जो यरूशलेम में एकत्रित होते थे उनकी कलीसिया में प्रार्थना और निवेदन हुआ करते थे। वे लगातार प्रार्थना, निवेदन और मध्यस्थता की प्रार्थना करते रहते थे। वे केवल एक मन रह कर प्रार्थना और निवेदन करते रहते थे- जो परमेश्वर की वर्षा होने से पहले की तैयारी है।

अगले 50 वर्षो तक कलीसिया में जाने, रविवार दो घण्टे वहाँ बिताने, बैठकर अच्छे सन्देश सुनने, अच्छा महसूस करने, परमेश्वर के विषय में ज्ञान प्राप्त करने को कोई लाभ नहीं, यदि आपने वास्तव में उसे

परमेश्वर का अनुभव नहीं किया है जिसे हम जानने का प्रयास कर रहे हैं। परमेश्वर के विषय में जानना और उसका अनुभव करना दो भिन्न बातें हैं। मसीहत केवल ज्ञान पर निर्भर नहीं है, यह तो परमेश्वर के साथ अनुभव पर आधारित है। हमें केवल कलीसिया की संगति ही नहीं बल्कि तीव्रता से उसको अधिक चाह की इच्छा रखनी चाहिए।

अतः हमारी कलीसिया का उत्तर यह होना चाहिए, "परमेश्वर, हमारा एक ही उद्देश्य है; हम आपको चाहते है और हम सब इस बात में एक मन है, पूर्णरुप से।" तौभी हमें स्वार्थ, सन्देह और प्रतिस्पर्धा के प्रति चौकस रहना है। क्योंकि यदि स्वार्थ होगा, तो सन्देह भी होगा और सन्देह प्रतिस्पर्धा की ओर ले जाएगा और प्रतिस्पर्धा बड़े अलगाव की ओर। इसमें इस प्रकार की भावनाओं का कोई स्थान नहीं हैं क्योंकि हम एकता में जुड़े हैं; क्योंकि हम एक मन और एक उद्देश्य के साथ हैं–हम परमेश्वर को अधिकाई से पाना चाहते हैं।

"यही" "वह बात" है

"जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। एकाएक आकाश से बड़ी आँधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूँज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं। वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे" (प्रेरितों के काम 2:1-4)।

जब पिन्तेकुस्त का दिन पूर्ण रुप से आ चुका था, वे सब एक मन होकर एक स्थान पर थे। "और अचानक..."(प्रेरितों के काम 2:1,2अ)। ध्यान दीजिए कि वे सब लगातार एकता के उद्देश्य में बने रहे। वे एक मन थे, एक स्थान पर थे और अचानक स्वर्ग खुल गया और परमेश्वर ने उन पर आग भेजी। यही वह था–उण्डेला जाना आरम्भ हुआ। इसी की प्रतिज्ञा यीशु ने की थी और यह आरम्भ हो चुका था।

यरूशलेम में हजारों यहूदी जमा हुए थे कि वे पिन्तेकुस्त का दिन मना सकें। इतिहासकार कहते हैं कि यह संख्या लाखों में हो सकती है। और तब उन 120 चेलों के बीच कुछ अजीब सी घटना हुई जो उपरौठी कोठरी में एकत्रित थे। वे अन्य-अन्य भाषा में बोलने लगे और इसका समाचार फैल गया होगा। थोड़ी ही देर में एक बड़ी भीड़ वहाँ जमा हो गई जिन्होंने सुना और देखा कि ये सब लोग अन्य-अन्य भाषाओं में प्रार्थना और परमेश्वर की प्रशंसा कर रहे हैं। तब पतरस ने भीड़ को समझाने की आवश्यकता समझी और इसलिए खड़े होकर कहा, "परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई थी" (प्रेरितों के काम 2:16)। यह कहकर कि "यह वही बात" है, पतरस ने पवित्रात्मा की अगुवाई में होकर कहा कि जो कुछ उस समय हो रहा था वह वही बात थी जिसकी भविष्यवाणी योएल नबी ने पुराने नियम में की थी।

"उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूँगा; तुम्हारे बेटे-बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगी, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे। तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उण्डेलूँगा" (योएल 2:28,29)।

अब वास्तव में पतरस क्या कह रहा था? उसने कहा, "यह वही बात है।" परन्तु यदि हम इस पद को पढ़ें; तब हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि "यह" "वह" बात नहीं थी। क्यों? योएल ने कहा, "तुम्हारे पुत्र और पुत्रियाँ भविष्यवाणी करेंगी, तुम्हारे पुरखा स्वप्न देखेंगे, तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे।" परन्तु ये 120 क्या कर रहे थे? उनके बीच में कोई भविष्यवाणी स्वप्न और दर्शन नहीं थे। बल्कि जो हुआ था वह यह था कि तेज हवा की आवाज, आग की जीभें और लोग अन्य-अन्य भाषा में बोल रहे थे। अतः वास्तव में यह "यह" "वह" बात नहीं थी। जब मैं अपने छात्रों को बाइबल का व्याख्यान करना सिखाता हूँ-वचन का ठीक अनुवाद कैसे किया जाए- तब मैं उनसे कहता हूँ कि वे यूनानी भाषा, उस समय का इतिहास और संस्कृति को पढ़ने और समझने में बहुत

सावधानी बरतें। अतः यदि हम अपने स्वाभाविक बुद्धि से इस घटना का विश्लेषण करें तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि "यह" "वह" बात नहीं थी। योएल ने "तेज हवाओं" के विषय में नहीं कहा था। योएल ने "आग की जीभों" के बारे में अथवा "अन्य-अन्य भाषाओं में बोलने" के बारे में भविष्यवाणी नहीं की थी। ये चिन्ह जो पिन्तेकुस्त के दिन प्रकट हुए उनकी चर्चा योएल की भविष्यवाणी में नहीं थी। परन्तु पतरस के द्वारा पवित्रात्मा कह रहा था कि "यह" "वही" बात है। यह निष्कर्ष मेरी बुद्धि के परे है।

यहाँ हमें दो महत्वपूर्ण बातें देखनी होगीः पहला, परमेश्वर अपने वचन-बाइबल से बड़ा है। हम प्रायः परमेश्वर को उसके वचन से समायोजित जिन करना चाहते हैं। परमेश्वर उस पुस्तक से बड़ा है जिसे उसने लिखा है। जिस पुस्तक को उसने लिखा है वह उसको एक असीम परमेश्वर का थोड़ा ही भाग प्रकट करती है। जितना मैं विश्वास करता हूँ वह यह है कि बाइबल सम्पूर्ण है, अलौकिक रूप से प्रेरित है, और हमारे इस पृथ्वी पर के जीवन का अन्तिम फैसला है। मैं जानता हूँ कि बाइबल हमारे असीम परमेश्वर को पूरी रीति से बखान नहीं करती है। परमेश्वर अपने वचन का कभी विरोध नहीं करता; वह उस वचन के प्रति सदैव सच्चा रहेगा जो उसने प्रकट किया है परन्तु वह अपने लिखित वचन से बहुत बड़ा है।

कभी-कभी जब हम वचन का विश्लेषण करते हैं और कहते हैं कि "इसका" अर्थ "वह" नहीं है, परन्तु परमेश्वर कहता है कि "यह" "वही" बात है। क्योंकि जब योएल ने आत्मा के काम के बारे में बताया उसने सभी के कामों की लम्बी सूची नहीं दी, उसने तो केवल प्रतिरूपी सूची दी-दर्शन, भविष्यवाणी और स्वप्न आदि। पिन्तेकुस्त के दिन जो कुछ हुआ वह भी पवित्रात्मा का काम था, ये कुछ अन्य काम थे-तेज हवाओं की आवाज, आग की जीभें और अन्य-अन्य भाषाओं में बातें करना। वे भी आत्मा के काम थे। अतः "यह" "वही" बात थी। आमीन्!

जागृति में हमें अवश्य बुद्धि और प्रकाशन में चलना चाहिए। हमें इन दोनों की आवश्यकता होती है। कभी-कभी हम बुद्धि से चलते हैं लेकिन प्रकाशन में नहीं चलते है। हम वचन के सारे इतिहास-इब्रानी, यूनानी और सब कुछ जानते है। हम प्राय: जानते है कि क्या "सही" है, परन्तु हमारे पास उस प्रकाशन की कमी होती है कि परमेश्वर "अभी" क्या चाहता है। अत: हमारे पास "सही काम" होता है जो एक मश्क के समान है, परन्तु हमारे पास "अभी के काम" का प्रकाशन नहीं होता है जो नया दाखमधु है। यदि हमारी मश्कों में नया दाखमधु नहीं समा पाएगा तो हमें नया दाखमुध प्राप्त नहीं कर पाएंगे। हमें बुद्धि और प्रकाशन दोनों चाहिए ताकि हम यह जान सकें कि परमेश्वर "अभी" क्या कर रहा है और हम उसका स्वागत करके उसमें चल सके। "अभी" शब्द परमेश्वर के लिखित वचन का कभी भी विरोध नहीं करता है, परन्तु हमारे पास "अभी" शब्द परमेश्वर के उस काम को जो वह कर रहा है समझ सकें।

दूसरी महत्वपूर्ण बात जो पतरस के "यह वही" बात है के आध ार पर कहने की आवश्यकता है कि कोई भी दो जागृति अथवा स्वर्ग से उण्डला जाना एक समान नहीं होते हैं। उनमें कुछ समानता हो सकती है परन्तु वे एक दूसरे के अनुरूप नहीं होते हैं। योएल ने परमेश्वर के आत्मा के उण्डेले जाने का विवरण दिया है। पिन्तुकुस्त के दिन जो कुछ हुआ वह परमेश्वर के आत्मा के उण्डेले जाने का असली काम था। परमेश्वर कह सकता है कि यह "उण्डेला जाना है, यह परमेश्वर का भ्रमण है।" परन्तु हम कह सकते है कि "यह" बिल्कुल उसकी तरह नहीं प्रकट होता। हम जागृति के इतिहास का अध्ययन कर सकते है, पाठ पढ़ सकते है, हम जागृति के नमूने बना सकते हैं लेकिन हम परमेश्वर को एक डिब्बे में रख कर यह नहीं कह सकते कि जागृति उसी तरह होनी चाहिए जैसी किसी एक जगह हुई थी। हमें परमेश्वर के लिए बहुत खुले होने की आवश्यकता है जैसे हम उसके उण्डेले जाने की ओर उन्नति कर रहे हैं। हमें यह जानना चाहिए कि परमेश्वर हमारे बीज में अभी क्या करना चाहता है। अब हमें अपने आप से ऐसे प्रश्न पूछने चाहिए, एक कलीसिया के रूप में परमेश्वर हमें किस ओर अग्रसर कर रहा है? इस

नगर के लिए परमेश्वर की क्या इच्छा है? हमारे नगर की जागृति ठीक उस प्रकार की नहीं हो सकती जैसी परमेश्वर ने संसार में कही और की है। यह बिल्कुल नई हो सकती है परन्तु फिर भी जागृति है, परमेश्वर का एक भ्रमण, स्वर्ग से आत्मा का उण्डेला जाना!

प्रेरितों के काम अध्याय दो के अनुसार हम देखते है कि कलीसिया का जन्म स्वर्ग के उण्डेले जाने के फलस्वरूप हुआ। बल्कि यह सबसे पहली कलीसिया थी।

"अत: जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गए" (प्रेरितों के काम 2:41)।

एक ही रात में 3000 लोगों की कलीसिया जीवित हो गई। प्राय: मैं कल्पना करता हूँ कि यह समय कैसा रहा होगा–उस समय के चेलों के स्थान पर अपने आपको रखने के द्वारा कैसा महसूस हुआ होगा। वे किसी सेमिनरी में नही पढ़े थे, "कलीसिया के प्रबन्ध" कलीसिया की उन्नति के सिद्धान्त" आदि को भी नहीं जानते थे। यह सब कुछ उनके पास नहीं था। परन्तु फिर भी एक ही रात में उनकी कलीसिया में 3000 लोग जुड़ गए। उनकी कोई योजना नहीं थी, कोई विशेष तरीका नहीं था, पहले से कोई निर्देश नहीं था, कोई नमूना भी नहीं था कोई ळ–12 सेल ग्रुप्स भी नही था–कुछ भी नहीं–परन्तु एक कलीसिया एक ही क्षण में उत्पन्न हो गई।

मैं सीखने अथवा योजना बनाने अथवा योजनाबद्ध तरीके से काम करने के विरोध में नहीं हूँ। मैं लोगों के हृदयों में एक बात डालना चाहता हूँ और वह यह है: "यदि परमेश्वर कुछ अपेक्षा के विरोध में कुछ कर रहा है तो हम उसे करे।" परमेश्वर सदैव हमारी योजनाओं के अनुसार कामन नहीं करता है। शिक्षित लोग होने के कारण, हम अपने मस्तिष्क का प्रयोग करने के आदी होते है और वहीं से हमें परमेश्वर के कामों को समझने में संघर्ष होता है। यदि परमेश्वर हमारी आशा के परे कुछ कर रहा है तो आइए इसके साथ चले!

2

जागृति में कलीसिया

यरूशलेम की कलीसिया का जन्म जागृति में हुआ। अतः यह हमारे लिए एक नमूना है कि एक कलीसिया जो जागृति से उत्पन्न होती है, कैसी होती है। हम कुछ बातें सीख सकते हैं जब हम स्वर्ग से उण्डेले जाने और जागृति का अनुभव करते है, तब हम क्या आशा कर सकते है। प्रेरितों के काम के पहले आठ अध्याय यरूशलेम की कलीसिया के प्रथम 12 वर्षों की तस्वीर प्रकट करते हैं।

प्रतिदिन लगातार उसी में बने रहे जो परमेश्वर उनके बीच में प्रकट करता रहा

"और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने, और रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे। और सब लोगों पर भय छा गया, और बहुत से अद्‌भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे। और सब विश्वास करनेवाले इकट्‌ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएँ साझे में थीं। वे अपनी-अपनी सम्पत्ति और सामान बेच-बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बाँट दिया करते थे। वे प्रतिदिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्‌ठे होते थे, और घर-घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे, और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे: और जो उद्धार पते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था" (प्रेरितों का काम 2:42-47)।

हम देखते है कि विश्वासी लोग उन्हीं बातों में प्रतिदिन बने रहे जिसे परमेश्वर उनके बीच में प्रकट करता रहा ।

"और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने, और रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में <u>लौलीन</u> रहे" (प्रेरितों के काम 2:42)।

"वे प्रतिदिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्‌ठे होते थे, और घर-घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे" (प्रेरितों के काम 2:46)।

"वे प्रतिदिन मन्दिर में और घर-घर में उपदेश करने, और इस बात का सुसमाचार सुनाने से कि यीशु ही मसीह है न रुके" (प्रेरितों के काम 5:42)।

ये लोग जो एक लघु यात्रा पर यरूशलेम में आए थे वे अचानक उसी में शामिल हो गए जो प्रतिदिन वहाँ हो रहा था। यह कुछ हमारे समय के जैसा ही जब हम रविवार को कलीसिया में जाते हैं, शायद कभी एक बार जागृति की विशेष सभा में भाग लेते है, एक शान्त जीवन जीते हैं जहाँ हमने सब कुछ ठीक-ठाक योजना बना ली है। परन्तु जागृति में प्रतिदिन कुछ न कुछ होता है। यरूशलेम की कलीसिया प्रतिदिन उसी में बनी रही जो परमेश्वर उनके बीच में कर रहा था। वे प्रतिदिन उसके साथ बहते रहते थे-न कि "सप्ताह में एक दिन" ही।

कार्यक्रम तेजी से प्रभावित होते थे

यह कल्पना करना बहुत आसान हो जाती है कि उनके कार्यक्रम तेजी से प्रभावित होते थे। जागृति में हमारे कार्यक्रम भी प्रभावित होंगे। शायद ऐसे समय में थोड़े गड़बड़ा भी जाएं। यरूशलेम के लोगों ने अपनी यात्रा पहले से बनाया होगा-शायद एक सुबह पहुँच कर पिन्तेकुस्त के उत्सव में भाग लेने के बाद अगले दिन वापस आने की योजना बनाई होगी-अथवा उससे अगले दिन काम पर जाने की योजना बनाई होगी। इस पर विचार कीजिए: वे यरूशलेम में आए है और वहाँ महान रूप से परमेश्वर के आत्मा का उण्डेले जाने का काम हो रहा है। उनके जीवन स्पर्श किए गए और 3000 लोगों ने उद्धार प्राप्त किया। उनके कार्यक्रम बदल गउ। कोई चीज उन्हें सुबह-शाम मन्दिर की ओर खींच रही थी कि वे परमेश्वर को खोजें और उसकी प्रशंसा करे। जब जागृति आती है तब कार्यक्रम बदलते है। मैं यहाँ यह नहीं कह रहा हूँ कि हम काम पर न जाएं। मैं यह कह रहा हूँ कि ऐसी बातें होगी जब हमारे कार्यक्रमों में बदलाव आएगा अथवा सन्शोधन होंगे। हमें यह जानकर जागृति में आना होगा कि हम ऐसे काल में है जहाँ परमेश्वर हमारे बीच में चलन कर रहा है। हमें परमेश्वर के काम के लिए अपने कार्यक्रमों में बदलाव लाने के लिए तैयार रहना चाहए। हममें से कुछ लोग प्रार्थना कर रहे होंगे कि

प्रभु, "हम जागृति चाहते है, परमेश्वर अपने आत्मा को उण्डेल दे, प्रभु हमारे पास आ।" परन्तु यदि परमेश्वर आए और हमारे कार्यक्रमों को बदले, तो क्या हम कहेंगे, "हम जागृति चाहते हैं परन्तु हमारे कार्यक्रमों को आप न छुए न ही हमारे जीवनों मे हस्तक्षेप करें। अथवा हम सच में तैयार है कि प्रभु जागृति के विषय में हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर दें?

सामाजिक भावना-आपस में बाँटते थे

"और सब विश्वास करनेवाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएँ साढे में थीं। वे अपनी-अपनी सम्पत्ति और सामान बेच-बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बाँट दिया करते थे" (प्रेरितों के काम 2:44,45)।

यरूशलेम की कलीसिया जैसे-जैसे जागृति में बढ़ती थी, हम देखते हैं कि उनके बीच में गहरी सामाजिक भावना थी-एक दूसरे के साथ बाँटना। अचानक वे दोपहर और रात के भोजना एक साथ करने लगे और उन लोगों के साथ यात्रा करने लगे जिन्हें वे पहले नहीं जानते थे। इन लोगों के बीच में सामाजिकता की पूरी भावना उत्पन्न हो गई थी। बाइबलद कहती है कि उनकी सब वस्तुएं साझे की थी और वे आपस में बाँटते थे। अत: जागृति क्या करती है? यह सच में हमारे जीवन में सामाजिकता की भावना उत्पन्न करती है। हम एक-दूसरे की यात्राओं, देने और दूसरों की सहायता करने में साथ देने लगते है।

कलीसिया की तेजी से उन्नति

हम यरूशलेम की कलीसिया में तेजी से उन्नति भी देखते है। "...और सब लोग उनसे प्रसन्न थे: और जो उद्धार पते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था" (प्रेरितों के काम 2:47ब)। हम उनकी प्रतिदिन की संख्या नहीं जानते परन्तु यह 100 अथवा 200 अथवा मात्र 10 ही हो सकती है, परन्तु बाइबल कहती है कि लोग प्रतिदिन जुड़ते जाते थे। पतरस के प्रथम सन्देश के बाद 3000 लोग एक दिन में जुड़ गए जब एक लंगड़ा व्यक्ति चंगा हो गया था (प्रेरितों के काम 4:4)। सच में महान कलीसिया की उन्नति। क्या हम नहीं चाहेंगे कि ऐसी अद्भुत बातें हमारे नगर की कलीसियओं में हो?

महान आश्चर्यकर्म जिसके कारण कलीसिया की लगातार उन्नति हुई

हम देखते हैं कि कलीसिया में ऐसे महान चमत्कार हुए जिनके कारण कलीसिया लगातार बढ़ती गई। बहुत से चमत्कार हुए परन्तु थोड़े ही चमत्कार प्रेरितों के काम की पुस्तक में हमारे लिए लिखे है। वहाँ एक मनुष्य था जो 40 वर्षों से लंगड़ा था और वह चंगा हो गया था (प्रेरितों के काम 3:1-8)। बीमार लोग दूर दूर से आते थे ताकि पतरस की छाया उस पर पड़े और वे ठीक हो जाते थे ताकि पतरस की छाया उस पर पड़े और वे ठीक हो जाते थे!

"प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अद्‌भुत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे, और वे सब एक चित्त होकर सुलैमान के ओसारे में इकट्ठे हुआ करते थे। परन्तु औरों में से किसी को यह हियाव न होता था कि उनमें जा मिलें; तौभी लोग उनकी बड़ाई करते थे। विश्वास करनेवाले बहुत से पुरुष और स्त्रियाँ प्रभु की कलीसिया में बड़ी संख्या में मिलते रहे। यहाँ तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला लाकर, खाटों और खटोलों पर लिटा देते थे कि जब पतरस आए, तो उसकी छाया ही उनमें से किसी पर पड़ जाए। यरूशलेम के आस-पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुओं को ला लाकर, इकट्ठे होते थे, और सब अच्छे कर दिए जाते थे" (प्रेरितों के काम 5:12-16)।

अत: जागृति के दौरान हमारे बीच में भी ऐसा ही होगा। अद्‌भुत आश्चर्यकर्म होंगे । हम अपने प्रतिदिन के जीवन में होनेवाले चमत्कारों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। परन्तु जागृति के समय में हमारे बीच में महान् और अद्‌भुत चमत्कार होंगे।

सताव

जागृति पूर्ण कलीसिया सताव को आकर्षित करती है। जब हम जागृति स्वर्ग से आत्मा उण्डेले जाने के मध्य में होंगे तो किसी न किसी कारण सताव को आकर्षित करेंगे। तब, क्या हमें वास्तव में आत्मा का उण्डेला जाना चाहिए? पतरस और यूहन्ना को महासभा के सामने लाया

गया और उन्हें चेतावनी दी गई कि यीशु के नाम का प्रचार न करें (प्रेरितों के काम 4:17,18)। प्रेरितों को जेल में डाल दिया गया (प्रेरितों के काम 5: 17,18)। स्तिफनुस को पत्थरवाह करके मार डाला गया (प्रेरितों के काम 7:58)। जागृति के दौरान बढ़ता हुआ सताव एक सामान्य बात है। पर ध्यान दीजिए कि प्रेरितों ने किस प्रकार प्रत्युत्तर दिया:

"परन्तु पतरस और यूहन्ना ने उनको उत्तर दिया, "तुम ही न्याय करो; क्या यह परमेश्वर के निकट भला है कि हम परमेश्वर की बात से बढ़कर तुम्हारी बात मानें क्योंकि यह तो हम से हो नहीं सकता कि जो हमने देखा और सुना है वह न कहें" (प्रेरितों के काम 4:19, 20)।

"वे इस बात से आनन्दित होकर महासभा के सामने से चले गए, कि हम उसके नाम के लिये अपमानित होने के योग्य तो ठहरे" (प्रेरितों के काम 5:41)।

प्रेरितों ने यह नही कहा कि हम परमेश्वर को बताएगे कि वह आकाश को बन्द कर दे अथवा आत्मा के उण्डेले जाने को "कम" कर दे। बल्कि वे उस काम में बढ़ते रहे जो परमेश्वर कर रहा था। वे परमेश्वर की आज्ञा मानने मे आनन्दित थे और हमारे प्रभु यीशु मसीह के लिए सताये जाने की बात को आदर की बात समझी। हमें भी अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम की खातिर दुख उठाने की बात को आदर की बात मानना चाहिए।

हममे से बहुतों ने बहुत आरामदायक मसीही जीवन जीया है। हमने शायद ही कोई सताव देखा है। शायद हमने 'थोड़ी ही चीजें' अपने कार्यस्थल पर देखी होगी जो हमारा सहकर्मी करता है-शायद वह हमसे बोलता नहीं है, हमारे साथ बाहर खाने पर नहीं जाता अथवा पहले वह आपके लिए कॉफी लाता था पर अब नहीं लाता क्योंकि उसे हमारे विश्वास के बारे में पता चल गया है। और हम सोचते है कि हम अपने विश्वास के कारण अपने कार्यस्थल पर सताव का सामना कर रहे हैं। सच्चाई तो यह है कि हमने ऐसा कुछ नहीं देखा है जिसे "सताव" कहते

हैं। परन्तु यदि हम कहते है, "परमेश्वर हम जागृति चाहते है," तब हमें बढ़ते हुए सताव के लिए तैयार रहना चाहिए जैसे यरूशलेम की कलीसिया ने सहा था।

पाप का कठोर न्याय

हम सब जानते हैं कि जागृति के माहौल में परमेश्वर की ओर से बहुतायत का अनुग्रह, चमत्कार और वरदान परमेश्वर के लोगों के बीच में होते हैं। परन्तु साथ ही साथ पाप का तुरन्त दण्ड भी होता है। हममे से कितने हैं जो झूठ बोलते है और मर जाते हैं। यदि ऐसा होता तो कोई जीवित नहीं होता। आज, यद्यपि हम सब विश्वासी है, हममें से कुछ फिर भी झूठ बोलते, चोरी करते है तौभी मर नहीं जाते। परन्तु यरूशलेम में जागृति के दौरान हनन्याह और सफीरा ने झूठ बोला और कलीसिया के दान में कुछ हेरा-फेरी की और वे तुरन्त मर गए (प्रेरितों के काम 5:1-10)। यह कठोर न्याय है!

अलौकिक प्रर्दशन और स्वर्गदूतों का प्रकट होना

प्रारम्भिक कलीसिया ने चंगाई और चमत्कार के अतिरिक्त अलौकिक प्रर्दशन और स्वर्गदूतों के आगमन का अनुभव किया। प्रेरितों के काम 4:31 में लिखा है, "...जिस स्थान पर वे प्रार्थना के लिए एकत्रित थे वह स्थान हिल गया।" यह केवल मामूली कम्पन नहीं थी बल्कि वह स्थान जहाँ वे मिले थे, हिल गया। कल्पना कीजिए कि आप एक प्रार्थना सभा में हैं और आप महसूस कर रहे है कि वह भवन हिल रहा है, परन्तु कुछ भी गिरता नहीं है। प्रेरितों के काम 5:19-21 कहता है कि स्वर्गदेत आया और प्रेरितों को जेल से बाहर लाया। प्रेरितों के काम 8:26 में लिखा है कि स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस को निर्देश दिया कि वह जंगल में जाए। अतः पवित्रात्मा के उण्डेले जाने के दौरान स्वर्गदूतों की क्रियाए और उनकी सेवा बढ़ेगी।

आन्तरिक समस्याओं से विचलित नहीं हुए

पवित्रात्मा के उण्डेले जाने अथवा परमेश्वर के भ्रमण के दौरान कलीसिया आन्तरिक समस्याओं से विचलित नहीं होगी। कभी-कभी हमारा गलत विचार होता है परमेश्वर के महान भ्रमण के दौरान किसी भी प्रकार की कोई समस्या नहीं होगी। इस बात के विपरीत यरूशलेम की कलीसिया ने समस्याओं का सामना किया। सबसे पहला झगड़ा था जो उन्होंने सुलझाया वह विधवाओं का झगड़ा था। कुछ यूनानी भाषा बोलने वाली विधवाएं थी और कुछ इब्रानी भाषा बोलने वाली विधवाएं थीं कुछ ऐसा महसूस कर रही थी कि भोजन बाँटने में उनके सथ अन्याय किया जाता है (प्रेरितों के काम 6)। और इसलिए वहाँ यह झगड़ा था, परन्तु प्रेरित परमेश्वर की बुद्धि के साथ खड़े हुए और उस समस्या का समाधान किया।

मुख्य बात यह है हमारी जागृति के मध्य भी आन्तरिक समस्याएं हो सकती हैं और हमें परमेश्वर की बुद्धि के द्वारा उनका समाधान करना है और डरना नहीं है। दूसरी जो ध्यान देने योग्य बात है वह यह कि अगुवों ने यह फैसला किया कि वे लगातार वचन की सेवा और प्रार्थना में लगे रहेंगे-उस काम में जो वास्तव में महत्वपूर्ण है-जागृति हेतु अगुवापन। यह हमारे लिए महत्वपूर्ण शिक्षा है जबकि हम परमेश्वर की खोज में हैं।

हमें यहाँ सावधान रहने की आवश्यकता है कि हम अगुवों की महिमा न करें। जागृति को एक मनुष्य अथवा एक सेवा तक ही सीमित मत रहने दें। तौभी हमें जागृति के लिए अगुवों की महत्वता को समझाना चाहिए-अगुवों को अपना स्थान लेना होगा, और परमेश्वर जो कुछ उनसे करवाना चाहता है उस पर केन्द्रित होकर जिम्मेदारी से अपना भाग अदा करना है। इसे उण्डेले जाने के काम को विस्तृत, बढ़ाने में सहायता मिलेगी और इसे धुधंला करने से रोकने में मदद मिलेगी। वेल्श जागृति के बारे में एक बात बहुत दुख की है। ईवान रौबर्टस जो जागृति के दौरान एक महान अगुवा था और ऊँचाईयों पर पहुँच गया था, परन्तु एक

दुर्भाग्यपूर्ण घटना हुई। अचानक अगुवेपन को छोड़कर बाहर आ गया। ईवान रौबर्टस शारीरिक और मानसिक रूप से गिर गया और जल गया। लगभग एक ही रात में उसने फैसला किया और अगुवेपन के स्थान से हट गया और उसने अपना बाकी जीवन प्राय: अकेलेपन में और प्रार्थना में गुजारा। यह एक बहुत दुखद घटना है एक ऐसे व्यक्ति के बारे में जिसे परमेश्वर ने सामर्थी रूप से वेल्श जागृति के दौरान प्रयोग किया।

जागृति में अगुवापन बहुत महत्वपूर्ण है। यद्यपि हम अगुवों को उठाना और उनकी महिमा नहीं करना चाहते है, तौभी हमें समझना है कि जो लोग अगुवेपन की सेवा में है और जागृति के लिए जिम्मेदार है, उनके लिए यह आवश्यक है कि वे केन्द्रित रहें, अपने आप को जलाने से बचाऐं और इसके साथ-साथ जिम्मेदारी निभाएं क्योंकि हम परमेश्वर के प्रति जबावदेह है उन सब कामों के लिए जो वह इस पृथ्वी पर हमारे लिए कर रहा है।

प्रत्येक जन चमत्कार मे बहता था

प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम बाद में देखते है कि प्रत्येक जन चमत्कार में बहने लगता था। थोड़ी ही देर बाद हम स्तिफनुस के बारे में सुनते है (प्रेरितों के काम 6) और फिलिप्पुस के बारे में (प्रेरितों के काम 8), जिनके द्वारा महान आश्चर्यकर्म होते थे। मैं इस बात में दृढ़ विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर चाहता है कि कलीसिया में प्रत्येक जन यीशु मसीह के नाम में बीमारों को चंगा करे, दुष्टात्माओं को निकाले, और मुर्दो को जीवित करे। वह चाहता है कि उसके लोग इस शहर की गलियों पर आक्रमण करें और परमेश्वर की महिमा का प्रर्दशन करें। प्रत्येक विश्वासी सड़कों पर और जहाँ कहीं लोगों की आवश्यकता है, वहाँ पर परमेश्वर के महान चिन्ह चमत्कारों को सम्पन्न करें। और परमेश्वर अपनी कलीसिया को इसी बिन्दु पर लाना चाहता है और परमेश्वर के आत्मा के उण्डेले जाने के दौरान ऐसा ही होगा। आप और मैं परमेश्वर की महिमा को सड़कों, बाजारों और जहाँ कहीं लोग रहते है वहाँ लेकर जाएंगे!

अग्नि फैल गई

जागृति की आग फैलती है। यरूशलेम में शाऊल के नेतृत्व में किए गए सताव के कारण विश्वासी लोग तितर-बितर हो गए परन्तु वे जहाँ-कहीं गए वहाँ अपने साथ आग ले गए। वे सामरिया, यहूदिया और अन्य स्थानों पर गए और उन्हें आग पर रख दिया (प्रेरितों के काम 8)। सामान्य विश्वासी जहाँ कहीं गए अपने साथ जागृति को ले गए। मैं विश्वास करता हूँ कि हममें से प्रत्येक जन भी "जागृति को ले जाने वाला" बनेगा-परमेश्वर के आत्मा के उण्डेले जाने के दौरान जागृति की आग को ले जाने वाले।

सताव का होना अथवा सताव का न होना हमें जागृति के बीच से ले जा सकता है। शायद यह आपकी नई नौकरी हो सकती है, हमारी नौकारियों में स्थानातरंण आदि हो सकता है। बंगलौर शहर से बाहर जाने के हमारे बहुत से कारण हो सकते है। परन्तु जब हम जाते हैं, हम परमेश्वर के आत्मा के उण्डेले जाने को अपने साथ ले जा सकते है। हम परमेश्वर की आग को ले जाएगे और संसार अन्य भागों को आग पर रखेंगे! और यही वह कलीसिया है जो जागृति में है!

एक कलीसिया जो जागृति में चलती है, उन बातों के बीच में जो प्रभु कर रहा है, तो इससे हमारे जीवन प्रभावित होगे; जैसा हम जानते हैं कि इससे हमारा कलीसियाई जीवन भी प्रभावित होगा। परन्तु यह एक मूल्यवान बात है, यिद हमारा नगर बदल जाए, तो हमें निश्चय हमें परमेश्वर के भ्रमण की आवश्यकता है। यदि हमारा शहर प्रभावित हो तो इसका अर्थ है कि हमें आज से अधिक परमेश्वर की आवश्यकता है। यद्यपि हम उन बस बातों के लिए आभारी हैं जो अब तक हमारे शहर में हुई हैं, तौभी हम अपने शहर के उन लोगों के बारे में सोचें जो अभी तक प्रभु यीशु को नहीं जानते हैं। अभी भी लाखों लोग है जो यीशु को नहीं जानते है। यदि हमें अपने शहर को प्रभावित करना है तो हमें परमेश्वर के आत्मा का महान उण्डेला जाना चाहिए। हमें परमेश्वर का भ्रमण चाहिए। हमें परमेश्वर की आज की तुलना में अधिक आवश्यकता

है और इसका अर्थ है कि आपको और मुझे इस दिशा में और आगे बढ़ते जाना है। क्या हम तैयार है कि प्रभु से एक महान् जागृति माँगे,उसके आत्मा का उण्डेला जाना? आइए हम एक ऐसी कलीसिया की ओर बढ़े जहाँ जागृति हो!

ऑल पीपल्स चर्च के प्रतिभागी

स्थानीय कलीसिया के रूप में संपूर्ण भारत देश में, विशेषकर उत्तर भारत में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा ऑल पीपल्स चर्च अपनी सीमाओं के पार सेवा करता है; उसका मुख्य लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवा के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। संपूर्ण वर्षभर जवानों, और पासबानों तथा सेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पासबानों की महासभाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, वचन में और आत्मा में विश्वासियों की उन्नति करने के उद्देश्य से अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां विनामूल्य वितरीत की जाती हैं।

जिन बातों की ओर परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसके लिए काफी पैसों की ज़रूरत होती है। हम आपको निमंत्रित करते हैं कि एक समय की भेंट या मासिक मदद भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ भागीदार बनें। देश भर में हमारे इस कार्य में हमारी सहायता करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई कोई भी रकम सराहनीय होगी।

आप अपनी भेंट "ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर" के नाम से चेक/बैंक ड्राफ्ट के जरिए हमारे ऑफिस के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा आप अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते की जानकारी लेकर सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं। *(कृपया इस बात को ध्यान में रखें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफ.सी.आर.ए. परमीट नहीं है, अतः हम केवल भारतीय नागरिकों से बैंक योगदान पा सकते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से यह लिख सकते हैं कि ए.पी.सी. की किस सेवकाई के लिए आप अपने दान भेजना चाहते हैं।)*

बैंक खाते का नाम : ऑल पीपल्स चर्च

खाता क्रमांक : 0057213809

आय एफ एस सी क्रमांक : CITI0000004

बैंक : Citibank N.A., 506-507, Level 5, Prestige Meridian 2, # 30, M.G. Road, Bangalore - 560 001

उसी तरह, कृपया जब भी हो सके, हमें और हमारी सेवकाई को प्रार्थना में स्मरण रखें। **धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे।**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

बदलाव

अपनी बुलाहट से समझौता न करें

आशा न छोड़ें

परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना

परमेश्वर एक भला परमेश्वर है

परमेश्वर का वचन

सच्चाई

हमारा छुटकारा

समर्पण की सामर्थ

हम भिन्न हैं

कार्यस्थल पर महिलाएं

जागृति में कलीसिया

प्रत्येक काम का एक समय

आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान

पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना

अपने पास्टर की कैसे सहायता करें

कलह रहित जीवन जीना

एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है

परिशद्ध करने वाले की आग

व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्ध्नों को तोड़ना

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना

राज्य का निर्माण करने वाले

खुला हुआ स्वर्ग

हम मसीह में कौन हैं

ईश्वरीय कृपा

परमेश्वर का राज्य

शहरव्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था

मन की जीत

जड़ पर कुल्हाडी रखना

परमेश्वर की उपस्थिति

काम के प्रति बाइबल का रवैया

ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा

अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ

प्राचीन चिन्ह

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पी डी एफ संस्करण निःशुल्क डाऊनलोड के लिए हमारे चर्च वेब साईट पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की निःशुल्क प्रतियां प्राप्त करने हेतु कृपया हमसे ई–मेल या डाक द्वारा संपर्क करें।

रविवार के संदेश के एम पी 3 ऑडियो रिकार्डिंग, तथा कॉन्फ्रन्स और हमारे गॉड टी. व्ही. कार्यक्रम 'लिविंग स्ट्रांग' के विडियो रिकार्डिंग को सुनने या देखने के लिए हमारे वेब साईट को भेंट दें।

बाइबल कॉलेज

विश्वसनीय एवं योग्य स्त्री और पुरुषों को सुसज्जित करने, प्रशिक्षित करने और भारत तथा अन्य देशों में सेवा हेतु भेजने के उद्‌देश्य से ऑगस्ट 2005 में ऑल पीपल्स चर्च – बाइबल कॉलेज एवं मिनिस्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर (APC - BC& MTC) की स्थापना की गई, ताकि गांवों, नगरों और शहरों को यीशु मसीह के लिए प्रभावित किया जा सके।

APC - BC& MTC दो कार्यक्रम प्रदान करता है :

- दो साल का **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्णकालीन विद्यार्थियों के लिए है और उत्कृष्ट शिक्षा के साथ आत्मिक और व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है। दो वर्षीय कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को **डिप्लोमा इन थियोलॉजी ऑण्ड क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** (Dip. Th.& CM) प्रदान की जाएगी।

- प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री ट्रेनिंग बाइबल कॉलेज के उन पद्‌वीधरों के लिए है जो व्यवहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। एक या दो साल पूरा करने वालों को **सर्टिफिकेट इन प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री** प्रदान किया जाएगा जो उनके प्रशिक्षण काल को दर्शाता है।

कक्षाएं अंग्रेजी में होती हैं। हमारे पास प्रशिक्षित तथा अभिषक्त शिक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त, सन 2012 में, चाम्पा क्रिश्चियन हॉस्पिटल की सहभागिता से हमने चाम्पा, छत्तीसगढ़ में अपने प्रथम अल्पकालीन (2.5 महीने) कार्यक्रम का संचालन किया। हमने इस कॉलेज से 45 विद्यर्थियों को प्रशिक्षित किया।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अत: हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **"पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों

से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

नोट्स

जागृति परमेश्वर के भ्रमण का काल है। यह स्वर्ग से उण्डेले जाने का समय है। भ्रमण के समय बहुत सी बातें भिन्न होती है।

हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए यह माँगते हैं कि वह जागृति भेजे– उण्डेला जाना अथवा स्वर्गीय भ्रमण, परन्तु क्या हम उस जागृति के लिए तैयार होना चाहिए जब वह प्रकट हो!

जब जागृति आती है तब कलीसिया कैसी दिखती है? आप और मैं जागृति के बीच होंगे तो हमें क्या होगा– जब स्वर्गीय उण्डेले जाने का काम होगा, परमेश्वर की ओर से आत्मिक भ्रमण होगा? एक बात तो पक्की है कि कलीसिया उस समय ऐसी नहीं होगी जैसी आज हम देखते हैं। जब हम कलीसिया के रुप में रविवार को इकट्टे होते है तब हम सामान्यत: पास्टर के उपदेश के समाप्त होने तक प्रतीक्षा करते है। हममें से कुछ लोग बीच–बीच में सो भी जाते हैं और घर चले जाते है। परन्तु जब परमेश्वर भ्रमण करेगा तब निश्चय ही कलीसिया बहुत भिन्न होगी। परमेश्वर के पवित्रात्मा के उण्डेले जाने हेतु तैयार हो जाएं!

आशीष रायचूर

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org